Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-15, Issue-4, March-2022
www.researchguru.net

निराला के काव्य में कल्पना शक्ति के विभिन्न आयाम

परमार महेन्द्रकुमार फतेसिंह
शोधछात्र हिन्दी विभाग आणंद आर्ट्स कोलेज, आणंद सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर मोः 9537918410

छायावादी कवियों ने कुछ हद तक काव्य में कल्पना को अपरिहार्य माना है । जिसका प्रमाणिक स्वरुप काव्य में कल्पना की विविध वर्ण छवियों में प्राप्त होता है । निराला ने अपनी कविताओं तथा अपने लेखों में कल्पना पर विचार प्रस्तुत किया है । उन्होंने कल्पना को काव्य के संदर्भ में विवेचित करने का प्रथम प्रयास अपनी कविता 'कल्पना के कानन की रानी' में किया है । काव्य को कल्पना के कानन की रानी कहते हुए कवि ने लिखा हैः-

"कल्पना के कानन की रानी / आओ, आओं मृदु पद मेरे / मानस की कुसुमति वाणी ।।"[1]

यहाँ कवि ने लाक्षणिकता का चित्रण किया है साथ ही पूर्ण कविता के रुपक को निर्वाह करने की उत्कृष्ट कलात्मकता भी । कानन को कल्पना में आरोपित कर के कवि ने वन्य जीवन की मधुर भयानकता का भी समावेश कर दिया है । कल्पना का वैशिष्ठ्य उसके भिन्न वर्गो, छवियों को कवि का काव्य अनुशासित रुप में अभिव्यक्त करता है । निराला कल्पना को कई अर्थों में प्रयुक्त करते हैं ।

रोमांटिक काव्यधारा के अंतर्गत ललित कल्पना के प्रयोग करने में निराला परिचित थे । निराला कल्पना द्वारा नूतन शब्द विधान, नूतन सादृश्य और छंद प्रयोजन कर लेते हैं । निराला की कल्पनाएँ किसी सीमा में आबद्ध नहीं है । जीवन जगत, प्रकृति, समाज, बौद्धदर्शन, रुढ़ियों से ग्रस्त भारतीय परिवार तथा ऐश्वर्य में रत स्थूल क्षेत्रों को विषय बनाकर निराला ने उस पर अपनी कल्पनाएँ संजोयी है । निराला की 'परिमल' एवं 'अनामिका' दूसरा संस्करण में चित्रित कीर्ति शिखर समान 'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज-स्मृति', 'बादलराग', 'पंचवटी' और 'तुलसीदास' राष्ट्रीय चिंतन की कल्पना है जिसकी उन्हें तत्कालीन युग में आवश्यकता है । निराला का काल्पनिक मन 'कुसुम कानन की रानी' को छोड़कर 'कुकुरमुत्ता' पर आकर टिक जाता है । 'राम की शक्तिपूजा' में शक्ति की मौलिक कल्पना का चित्रण बड़ा अप्रितम है । निराला की काव्य कल्पना का अबाध विस्तार न जाने कितने स्थूल और सूक्ष्म काल्पनिक रुपों में पाठक के समक्ष उपस्थित होता है । उनकी कल्पना का एक स्थूल परिदृश्य प्रस्तुत है । निराला के काव्य में निम्नांकित प्रकार की कल्पनाएँ देखने को मिलती हैः-

मूर्ति विधायिनी कल्पनाः-

इस प्रकार की कल्पना में किसी वस्तु, घटना, रुप, आकार, गति, वर्ण आदि का स्पष्ट चित्रण शब्दों के माध्यम से कवि

द्वारा किया जाता है । यह अलंकार के क्षेत्र में मानवीकरण का सृजन करती है तथा बिम्ब के क्षेत्र में आश्रय रुप में किसी दृश्य को उपस्थित करती है । निराला ने अपनी कविताओं में अनेक प्रकार के कल्पना सबंधी चित्र खींचे है । उनकी मूर्ति विधायिनी शक्ति मात्र किसी स्मृति के द्वारा लाये गये चित्र का ही रुप नहीं होता बल्कि गीत, वर्ण, रुप आदि का मिश्रित चित्र होता है । जो कवि किसी कल्पना में एक के साथ अनेक गुणों का सक्षम प्रयोग कर सकेगा मूर्ति कल्पना में वह उतना ही सफल होगा । निराला की कविता में मूर्ति विधायिनी कल्पना के पीछे दो तत्व काम करते हैं - उनकी काल्पनिक स्मृतियाँ नितांत चित्रवत हैं तथा उनकी कविताओं में एक प्रकार की नाटकीयता की अदृश्य शक्ति सदैव विद्यमान रहती है । निराला की 'जूही की कली' इसी प्रकार की मूर्ति विधायिनी कल्पना की सृष्टि है ।

'राम की शक्तिपूजा' से रावण से पराजित राम अपने युद्ध शिविर में बैठे हुए जिस चित्र को बनाते हैं वह सामान्य चित्र नहीं है । पुष्पवाटिका के प्रसंग से लेकर और लंका काण्ड के घर्षणयुक्त राम को यह स्मृति कल्पना का सजीव मूर्ति का निर्माण निम्नांकित पंक्तियों में देखेः-

"याद आया उपवन / विदेह का, प्रथम स्नेह का, लतान्तराल मिलन / नयनों का नयनों से गोपन- प्रिय संभाषण / पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन / काँपते हुए किसलय, झरते पराग-समुदय / गाते खग नव जीवन-परिच, तरु मलय-बलय / ज्योतिः प्रपात स्वर्गीय ज्ञात छवि प्रथम स्वीय / जानकी नयन कमनीय प्रथम कंपन तुरीय ।।"[2]

इस तरह निराला की 'किसान की नई बहू की आँखे', 'प्रेयसी', 'संध्या सुंदरी', 'जूही की कली', 'शेफालिका' आदि रचनाओं में भी मूर्ति विधायिनी कल्पना दृष्टिगोचर होती हैं ।

बिम्ब से प्रभावित कल्पनाः-

बिम्ब से प्रभावित कल्पनाएँ वह होती हैं जिनमें कवि दृश्य व्यापार की योजना करता है अर्थात् इन्द्रिय ग्राह्य रुपों का स्वाद जैसे स्वाद, ध्राण, स्पर्श, श्रोत और चाक्षुष विषयों का चित्र सामने लाकर उपस्थित कर देता है । इस प्रकार की कल्पना में कवि मात्र इन्द्रिय व्यापार तक सीमित न रहकर उसे अधिक रसग्राही बनाने के लिए प्रकृति के मानवस्थ मनोविकार के रुपों से उसका सादृश्य धर्म निरुपित कर देता है । इस प्रकार की कल्पना में वह दो या दो से अधिक दूरियों को मिलाकर प्रस्तुत कर देता है । अप्रस्तुत विधान योजना, चित्र योजना, बिम्ब योजना आदि नाम इसी बिम्ब विधायिनी कल्पना के ही नाम हैं । 'विधवा' कविता की निम्नांकित पंक्तियों में इस कल्पना का चित्रण देखें ....

"वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी / वह दीपशिखा सी शान्त भाव में लीन /

वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखा सी / वह टूटे तरु की छूटी लता सी दीन /

दलित भारत की ही विधवा है ।।"[3]

उपर्युक्त पंक्तियों में विधवा के लिये मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार के

उपमानों का प्रयोग किया गया है । यहाँ कवि ने कल्पना में मूर्त और अमूर्त दोनों दूरियों को मिलाया है । इसमें 'लता' और 'दीपशिखा' स्थूल उपमान हैं और 'पूजा', 'स्मृति रेखा' अमूर्त । कवि ने यहाँ विधवा को पूजा कह कर उसकी पवित्रता, सौम्य तथा मन के अंदर अपने इष्टदेव (पति) के ध्यान में संलग्न चित्रित की है । शांत भाव में लीन दीपशिखा कहकर समस्त श्रृंगारिक वासनाओं से विमुख कर दिया है । यह विधवा दलित भारत की है या भारत की दलित है । यह पाठकों के लिये छोड़ दिया गया है । ऐसे स्थलों में बिम्ब विधायिनी कल्पनाएँ होती हैं । निराला में गतिमय बिम्बों को पकड़ने की तीक्ष्ण कुशलता थी ।

मनोहारी कल्पनाः-

सौंदर्यबोध मनोहारी कल्पना का प्रमुख आधार है । छायावाद में सौंदर्यबोध के प्रति एक विशेष प्रकार का रुप दिखाई देता है । छायावाद में सौंदर्य अभिव्यक्ति के तीन रुप प्राप्त होते हैं । मानव सौंदर्य, मानवेत्तरसौंदर्य तथा कल्पनात्मक सौंदर्य । इस प्रकार के सौंदर्य निरुपण में कवि अपने को इस प्रकार परिवर्तित कर देता है कि वह एक उच्चतर आनंद की प्राप्ति कर सके । जब मानव सौंदर्य मानवेत्तर सौंदर्य के साथ कल्पना के माध्यम से रमणीय आवरण में ढक जाता है तो इस प्रकार की कल्पनाएँ मनोहारी कल्पनाएँ कहलाती हैं । मनुष्य के हृदय की नाना प्रकार की भाव प्रवणता को कवि मानवेत्तर सौंदर्य में प्रकट करता है । एक स्थान पर निराला ने लिखा हैं कि "जब दृष्टि सुंदर से लिपटती है तब कुरुप से हट जाती है । उसे अवज्ञा का धक्का मारती हुई ।"[4] यहीं एक दृष्टि है जो उदात्त होकर आध्यात्म से भी मिल जाती है ।

निराला का उदात्त रुप का मनोहारी कल्पना से संश्लिष्ट काल्पनिक विधान देखें-

"खुले केश अशेष शोभा भर रहे / पृष्ठ-ग्रीवा-बाहू-उर पर तर - रहे /

बादलों में घिर ऊपर दिनकर रहे / ज्योति की तन्वी तड़ित / द्युति ने क्षमा मागी ।"[5]

उपर्युक्त पंक्तियों में निराला ने शारीरिक सौंदर्य के साथ प्रकृति के इस व्यापार को भी प्रयुक्त किया है । नायिका के खुले बाल, पीठ, कंधे और बाहुओं में फैल रहे हैं । इन बालों के बीच में नायिका का मुख ऐसा दिखाई देता है जैसे बादलों के बीच में सूरज चल रहा है । नायिका ज्योति की डोर की तरह से प्रतीत होती है और व्यतिरेक भाव से नायिका की कान्ति के सामने बिजली क्षमा मांग कर लाई गई है और सूरज बादलों में छिप गया है ।

प्रस्तुत कविता की पंक्तियों में प्रकृति व्यापार के बीच क्रिया-व्यापारों का एक उदात्त रुप प्रस्तुत किया गया है, जिसमें मानवीय श्रृंगार बोध की क्रियाओं का आरोप प्रकृति के उपर किया गया है ।

ऐतिहासिक कल्पनाः-

निराला की कविताओं में ऐतिहासिक कल्पनाएँ भी प्राप्त होती हैं । ऐतिसाहिक कल्पना के माध्यम से किसी व्यक्ति, घटना, समय आदि का बोध कराने के लिए उसके रुप को प्रस्तुत किया जाता है । यह कार्य कभी किसी घटना को पूर्ण रुप से वर्णन करते हुए किया जाता है और

कभी नाम या घटना के उल्लेख से ही उस समस्त ऐतिहासिक रुप को प्रस्तुत कर देता है । ऐतिहासिक दृष्टि के पीछे कवि का कोई न कोई उद्देश्य छिपा हुआ रहता है । पराधीन भारत के जीवन और संस्कृति की विराट दुखपूर्ण गाथा निराला की 'तुलसीदास' कविता में चित्रित हैं । 'कुकुरमुत्ता' कविता में कवि ने अपने देश तथा दूसरे देश के ऐतिहासिक नामों का मात्र उल्लेख करके उसे वातावरण और घटनाओं की सृष्टि की है । ऐतिहासिक कल्पना दो रुपों में काव्य में प्रयुक्त होती है । पहले रुप में इतिहास की किसी घटना, विषय वस्तु या चरित्र को कविता का आधार बनाकर या दूसरा बिम्ब, उपमान, प्रतीक आदि में किसी ऐतिहासिक घटना या चरित्र को अप्रस्तुत रुप में लाकर । निराला ने अपनी कविताओं में इन दोनों रुपों का प्रयोग किया है ।

निराला के काव्य में ऐतिहासिक कल्पना का चित्रण देखें-

"हिन्दुस्तान मुक्त होगा घोर अपमान से / दासता के पाश कट जायेंगे /
मिलो राजपूतों से /
घेरों तुम दिल्ली गढ़ /
तब तक मैं दोनों सुलतानों का देख लूँ /
सेना धनपटा सी /
मेरे वीर सरदार ..../ सोंप सर्वस्व निज ।।"[6]

उपर्युक्त काव्यांशों में शिवाजी और जयसिंह के बीच जो औरंगजेब के साथ न रहने का प्रस्ताव हुआ था उस ऐतिहासिक घटना की और संकेत किया गया है ।

संश्लिष्ट कल्पनाः-

संश्लिष्ट कल्पना उसे कहते हैं जहाँ कवि एक ही भाव पर कई अन्य भावों का आरोप करता चला जाता है या एक ही दृश्य पर कई प्रकार की विभिन्न कल्पनाएँ लाकर जोड़ देता है । निराला के काव्य में ऐसी कल्पना प्रभूत मात्रा में दृष्टिगोचर होती है । निराला अपने काव्य में प्रकृति और राजनीतिकों को एक में मिलाकर प्रस्तुत करते हैं । वे अर्थ और दर्शन को एक साथ रखते हैं । संश्लिष्ट कल्पनाओं में अनेक कल्पनाएँ एक साथ जुड़ी हुई होती हैं और वे आवश्यक नहीं है कि एक ही क्षेत्र की हों बल्कि कई प्रकार के क्षेत्रों से लाकर एक ही स्थल पर संयुक्त कर दी जाती हैं ।

निराला की 'कुकुरमुत्ता' कविता में संश्लिष्ट कल्पना का चित्रण देखें -

"विष्णु का मैं ही सुदर्शन चक्र हूँ / काम दुनिया में पड़ा ज्यों, वक्र हूँ /
उलट दें, मैं ही जशोदा की मथानी / और भी लम्बी कहानी /
सामने लाकर मुझे बेड़ा / देख कैंडा / तीर से खींचा धनुष में राम का ।।"[7]

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में विष्णु का सुदर्शन चक्र, यशोदा की मथानी आदि उपमान विविध क्षेत्रों से प्रयुक्त किये गये हैं । इस प्रकार की कल्पनाएँ संश्लिष्ट इसलिये हो जाती हैं कि इसमें पाठकों को एक ही स्थान में केन्द्रित रहने का मौका नहीं मिलता जबकि उसे यत्र तत्र दौड़ना पड़ता है।

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' कविता में संश्लिष्ट कल्पना का चित्रण देखें-

"देखो बन्धुवर सामने स्थित जो यह भूधर /

शोभित शत हरित-गुल्म-तृण ये श्यामल सुंदर /

पार्वती कल्पना है इसकी मकरन्द बिंदु /

गरजता चरण प्रान्त पर सिंह वह, नहीं सिन्धु /

दशदिक - समस्त है हस्त,और देखो उपर /..../

मानव के मन का असुर मंद, हो रहा खर्च ।।"[8]

निराला ने उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से त्रिकूट पर्वत पर बैठे हुए राम के मुख से संश्लिष्ट कल्पना का चित्र फ्रस्तुत किया है। इसमें पर्वत का विराट बिम्ब है तथा मनुष्य के मन के अंदर असुरी शक्तियों के भाव है । पार्वती को आधार बनाकर कल्पना की गई है । ये आदि शक्ति रुपा है,दशों दिशायें ही उनकी दश भूजा हैं । नंगी दिशाएँ जो आकाश को धारण किये हुए हैं वे शिव का रुप हैं ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निराला ने अपने काव्य में कल्पना शक्ति के विभिन्न रुपों का प्रयोग कर अपने काव्य को अनूठा बनाया है । छायावाद में निराला के साहित्य का अपना विशेष स्थान हैं । निराला के काव्य में निहित कल्पना के विविध रुपों को देखकर कहा जा सकता है कि निराला कल्पनाशीलता के धनी थे । उन्होंने अपने साहित्य में छंद का चित्रण भी मुक्त रुप से किया है । उनके काव्य की शिल्पपक्षीय विशेषता पूरे छायावाद युग में उन्हें गौरान्वित पद पर आरुढ़ करवाती है ।

संदर्भः-

1. गीतिका - ले. निराला, पृ. 28
2. अनामिका - ले. निराला, पृ.45
3. परिमल - ले. निराला,पृ.100
4. देवी-ले.निराला, पृ.128
5. अपरा - ले. निराला, पृ.24
6. परिमल- ले. निराला, पृ.236
7. कुकुरमुत्ता- ले. निराला, पृ.42
8. अनामिका- ले. निराला, पृ. 164-165